कानोड़ विद्यालय को मिला जय तुलसी विद्या पुरस्कार

''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राश्ट्र स्वयं सुधरेगा''

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 30 सितम्बर।

आचार्य तुलसी द्वारा रचित अणुव्रत गीत की यह पंक्तियां ''सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राश्ट्र स्वयं सुधरेगा'' उस समय सार्थक होती नजर आई जब जैन वि-व भारती द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला ''जय तुलसी विद्या पुरस्कार'' कानोड़ के तुलसी अमृत निकेतन संस्थान को प्रदान किया गया। विकसित राश्ट्र की धूरी है बाल पीढ़ी और उसके निर्माण की दि-ा में कानोड़ के इस विद्यालय ने मूल्य परक ि-क्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। जिसका मूल्यांकन करते हुए जैन वि-व भारती ने आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित जय तुलसी विद्या पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये का चेक, प्रतिक चिन्ह, प्र-ास्ति पत्र, साहित्य आदि मंत्री श्री भीखमचन्द पुगलिया, उपमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया, प्रायोजक श्री विजयसिंह सेठिया, श्री बाबूलाल सेठिया श्री गुंजन सेठिया के द्वारा विद्यालय के प्रतिनिधियों को समर्पित कर गौरव का अनुभव किया।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि ि-क्षा संस्थाओं का लक्ष्य अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करना होना चाहिए। इस लक्ष्य के कारण समाज, राश्ट्र का निर्माण अपने आप हो जाएगा। अच्छे व्यक्तित्व के अभाव में समाज अच्छा नहीं बन सकता और जब समाज अच्छा नहीं होगा तो अच्छे राश्ट्र की कल्पना करना सार्थक नहीं होगी। आचार्यप्रवर ने कहा कि जो विद्या के क्षेत्र में कार्य करता है वह वर्तमान समस्याओं के समाधान में योगभूत बनता है।

आचार्यप्रवर ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान को नैतिक मूल्यों के विकास के स-ाक्त माध्यम बताते हुए कहा कि तुलसी अमृत निकेतन में नैतिक मूल्यों पर अच्छा कार्य हो रहा है। वहां के कार्यकर्त्ताओं में उत्साह है, लगन है, वे जिस लगन से कार्य कर रहे हैं, वह महत्त्वपूर्ण है। आचार्यश्री ने विद्यालय संचालन कमेटी को और अधिक कार्य करने का आ-ीर्वाद दिया।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि ि-क्षा में बुद्धि और :ुद्धि दोनों के विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए। युवाचार्यवर ने तुलसी अमृत निकेतन के विद्यार्थियों की अनु-ासनबद्धता और संस्कारों की सरहाना की।

कार्यक्रम में जैन वि-व भारती के मंत्री श्री भीखमचन्द पुगलिया ने स्वागत भाशण एवं प्रायोजक श्री विजयसिंह सेठिया ने विचार रखे। विद्यालय की तरफ से श्री सवाईलाल पोखरना ने पुरस्कार स्वीऔति भाशण दिया एवं आभार ज्ञापन उपमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया ने किया, संचालन सुश्री वंदना कुण्डलिया ने किया।

बच्छावत ने दिये जैन विद्या के विकास हेतु 75 लाख

लाडनूं 30 सितम्बर।

जैन वि-व भारती स्थित सुधर्मा सभा में आयोजित कार्यक्रम में श्री नौरतनमल बच्छावत, श्रीमती कुमुद बच्छावत एवं श्री संजय बच्छावत ने अपनी मातुश्री के 75 वर्श पूर्ण करने पर जैन विद्या के विकास हेतु जैन वि-व भारती को 75 लाख रुपये का चैक प्रदान किया। मंत्री श्री भीखमचन्द पुगलिया, उपमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया, आरबीट्रेटर श्री प्रका-ा बैद ने चेक को स्वीकार किया।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि जैन विद्वानों की कमी है उस पर ध्यान देना जरूरी है जैन विद्वानों को तैयार करना जैन वि-व भारती का कार्य है, इसके लिए बच्छावत परिवार ने कार्य प्रारंभ कर दिया है। जैन विद्या को वि-व स्तर पर पहुंचाने का यह कार्य अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

युवाचार्यश्री ने जैन विद्या के विकास के चिंतन को काम्य बताया, इस अवसर पर बच्छावत परिवार ने सिरियारी संस्थान को जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के प्रसार हेतु एक बोलेरा गाड़ी भेंट की। सिरियारी संस्थान की तरफ से श्री कमल पटावरी एवं श्री गुप्ता ने गाड़ी हेतु बच्छावत परिवार से रा-ि का चेक प्राप्त किया। कार्यक्रम में ''अर्हत वंदना'' की हिन्दी, अंग्रेजी व संस्औत भाशा युक्त औति का लोकार्पण हेतु आचार्यश्री महाप्रज्ञ को श्री नौरतनमल बच्छावत एवं श्रीमती कुमुद बच्छावत ने प्रथम प्रति भेंट की।